अहलेबैत (अ0) के चरित्र–आचरण की पाठशालाएँ बना दें और मजलिस में शरीक होने वाले भी सिर्फ सुनने, वाह–वाह, सुब्हानल्लाह के नारे लगाने और दूसरे कान से उड़ा देने के मन से नही, बल्कि हर मजलिस से कुछ न कुछ प्राप्त करके उठें। निश्चित ही हुसैन (अ0) की शहादत ने हमें संचार–प्रचार का एक उत्तम माध्यम दिया है जो किसी सम्प्रदाय को प्राप्त नहीं और वह हमारी मजलिसें हैं। बस आवश्यक्ता इतनी है कि इस माध्यम और साधन का सही उपयोग किया जाये। तलवार जितनी धार वाली और तेज़ होगी ग़लत उपयोगसे बुरे परिणाम निकलने की उतनी ही सम्भावना होगी। अब इस संचार माध्यम को भी ग़लत हाथों में जाने से बचाना चाहिए नहीं तो लाभप्रद परिणामों के बदले बुरे परिणाम प्राप्त होते चले जायेंगे।

'kc vk'kj

अल्लामा नज्म आफ़न्दी

चाँद कुमहलाया हुआ निकला शबे आशूर को
किस क़दर ग़म का अन्धेरा था शबे आशूर को

हो रही थीं तेज़ तलवारें नबी (स0) की आल पर
लरज़ा बर अन्दाम थी दुनिया शबे आशूर को

ज़िन्दगी की गोद में वो इज़्तेराबे कायनात
बन गई बे शीर का झूला शबे आशूर को

आह निकली सीन–ए–गेती से पहुँची ता फलक
तोड़ कर फितरत का सन्नाटा शबे आशूर को

कर्बला के दश्त में बेख़्वाब था जाने हिजाज़
सो रहे थे यसरिबो बतहा शबे आशूर को

मुत्तहिद था शुक्रे हक़ में सुब्ह करने के लिए
क़ाफ़िला दो रोज़ का प्यासा शबे आशूर को

थे तबस्सुम रेज़ अन्सारे हुसैन (अ0) इब्ने अली (अ0)
ज़िन्दगी दिलचस्प थी गोया शबे आशूर को

अल्ला अल्ला चाहते हैं तुझको अन्सारे हुसैन
ज़िन्दगी ने मौत से पूछा शबे आशूर को

ऐसे बेपरवा कि जैसे सर ही शानों पर नही
जंग पर जब फैसला ठहरा शबे आशूर को

कुछ सादाएँ आ रही थीं खेमा–ए–शब्बीर से
दर्द का तूफान था दरिया शबे आशूर को

शम्आ लेकर रुए अक्बर देखने बैठी थी माँ
सुब्हे महशर तक ठहरना था शबे आशूर को

जाने क्यों कर रह गए पर्दे में असरारे अज़ल
नंगे सर थीं फातिमा ज़हरा शबे आशूर को

नजमे गरदूँ सर बसिजदा है सितारे बे ज़बाँ
किस से पूछें तुम ने क्या देखा शबे आशूर को